International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070
Impact Factor: RJIF: 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 2; Issue 2; February 2016; Page No. 09-11

अनुवाद की समस्याएं

डॉ शिवदत्त शर्मा

पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय महाविद्यालय ढलियारा कांगडा हिप्र

अनुवाद शब्द का अर्थ स्वयं ही स्पष्ट है। एक भाषा के भाव तथा अर्थ को किसी दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना अनुवाद कहलाता है। अनुवाद करने में भाषा ही माध्यम है जिसमें एक भाषा में की गई अभिव्यक्ति को दूसरी भाषा में बदला जाता है। वास्तव में अनुवाद जितना सरल दिखाई देता है, उतना है नहीं, क्योंकि अनुवाद कार्य न केवल श्रम साध्य है, अपितु इसके लिए चतुर्मुखी ज्ञान का होना भी अनिवार्य है। अनुवाद दो भिन्न भाषाओं में होता है तथा दोनों भाषाओं में प्रकृतिगत पूर्ण साम्य होता नहीं है। श्री रिचर्डस ने भी इसे नितान्त कठिन कार्य कहा है। स्पष्ट है कि जब यह इतना जटिल कार्य है तो निश्चित ही इसके निष्पादन में भी अनेक कठिनाईयां स्वाभाविक रूप से होंगी। यही नहीं अनुवाद के प्रकार और क्षेत्र भी पृथक–पृथक हैं। स्पष्ट है कि उनसे सम्बन्धित समस्याएं भी भिन्न भिन्न होंगीं। अनुवाद सीधे रूप से भाषा, विषय और विधा से जुडा होता है। इस लिए अनुवाद की मुख्यतः सामान्य समस्याएं भी तीन प्रकार की होतीं हैं। इन्हें हम इस प्रकार अभिव्यक्त कर सकते हैं–

1 भाषा गत समस्याएं
2 विषयगत समस्याएं
3 विधा गत समस्याएं

वस्तुतः उपरोक्त समस्याएं न केवल अनुवाद की ही हैं अपितु लेखन की भी हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी अलग पहचान और विशेषता होती है। उदाहरण के लिए कहा जा सकता है कि दक्षिण भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में वैसी सहायक क्रियाएं नहीं हैं जैसी कि हिन्दी में तथा अन्य उत्तरी भारत की भाषाओं में पाई जातीं हैं। एक जैसी भाषाओं के अनुवाद की तुलना में भिन्न प्रकृति की भाषाओं में अनुवाद करना न केवल श्रमसाध्य ही है अपितु एक चुनौति होता है। जब दक्षिण भारतीय भाषाओं में ही परस्पर अनुवाद किया जाता है तो कोई बडी समस्या उत्पन्न नहीं होती, क्योंकि इस दृष्टि से दक्षिण की भाषाएं न्यूनाधिक रूप से समान अधिक हैं तथा असमानता का अंश कम है। अनुवाद अथवा लेखन का उद्देश्य विचारों को दूसरे तक पहुंचाना ही तो है, इस तरह अनुवाद का मुख्य लक्ष्य भावों की सम्प्रेषणीयता ही है। सम्प्रेषणीयता में असफल होने पर अनुवाद का उद्देश्य ही पराजित हो जाता है। अनुवाद में प्रयुक्त कृत्रिमता से सम्प्रेषणीयता में निश्चित रूप से बाधा आती है। अनुवाद का कार्य वस्तुतः भाषाओं के माध्यम से ही होता है। सभी भारतीय भाषाओं पर अंग्रेजी के वाक्य– विन्यास का प्रभाव है तथा प्रायः सभी में यही समस्या प्रमुख है– अंग्रेजी के वाक्य– विन्यास का अनुसरण करना। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद अक्षरशः करेंगे तो अंग्रेजी के वाक्य–विन्यास का अनुसरण करने के कारण बिषय अस्पष्ट सा हो जाएगा। अंग्रेजी भाषा का वाक्यविन्यास भारतीय भाषाओं से नितान्त भिन्न है। वैसे भी सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद करते समय प्रायः अंग्रेजी के वाक्य विन्यास का अनुसरण करती हैं, इसके प्रभाव के कारण भारतीय भाषाएं अपनी प्रकृति से दूर चली जातीं हैं। अर्थात् अंग्रेजी वाक्य विन्यास के अनुसरण से अनूदित पाठ में स्वाभाविकता नहीं आ पाती तथा भारतीय भाषाओं में विकार उत्पन्न हो जाता है। आज अधिकतर अनुवाद भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी से ही हो रहा है,जिसका विपरीत प्रभाव यहां भाषाओं पर पड रहा है। तीसरी भाषा के द्वारा अनुवाद करते समय यह समस्या और भी विकट हो जाती है। [1]

आज वर्तमान युग में आधुनिकता के कारण अनेक वैज्ञानिक खोजों के कारण नईनई वस्तुओं का निर्माण हो रहा है। नए परिप्रेक्ष्य में नई तकनीक के साथसाथ नए नए शब्दों का निर्माण आवश्यक है जो उस गति से नहीं बनाए जा सके हैं, जिनकी नितान्त आवश्यकता है। अनेक भाषाएं अब भी संस्कृत से शब्द ले रहीं हैं। नए गढे गए शब्द अप्रचलित होने के कारण कृत्रिम लगते हैं और अनुवाद की भाषा को भी कृत्रिम एवं असाधारण बना देते हैं। अनुवाद का एक और उद्देश्य भी होता है कि वह जिस वर्ग के लागों के लिए लिखा जाता हे, उनकी समझ में ठीक प्रकार से आ सके। इस तरह अनुवाद करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। इनको निम्न लिखित अनुषंगों में बांटा जा सकता है–

1 ध्वनि विाान विषयक कठिनाईयां
2 रूप विज्ञान विषयक समस्याएं
3 अर्थ विज्ञान विषयक समस्याएं
4 वाक्य विज्ञान विषयक समस्याएं

1 ध्वनि विज्ञान विषयक कठिनाईयां–

अनुवाद करते समय ध्वनिविज्ञान विषयक अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। इसके अन्तर्गत लिप्यन्तरण एवं ध्वन्यानुकूल की समस्याओं का उल्लेख किया जाता है। अनुवाद करते समय स्त्रोत भाषा की कोई ध्वनि लक्ष्य भाषा में न हो तब समस्या उत्पन्न हो जाती है। ध्वन्यात्मक समस्या का सामना आमतौर पर आशु अनुवादक या दुभाषिए को करना पडता है। भाषा में महाप्राण और अल्पप्राण की व्यावहारिकता भीउस भाषा के व्याकरण पर आधारित होती है। उदाहरणस्वरूप उर्दु में प्रताप को परताप उच्चारित किया जाता है। इसी प्रकार अन्य भाषाओं में भी उच्चारण का भेद देखा जा सकता है।

फ्रांसीसी भाषा में अन्तिम ट का उच्चारण नहीं किया जाता, उसका उच्चारण उसी तरह करना उपयुक्त होगा। अंग्रेजी में अनेक शब्दों का उच्चारण किसी विशेष निश्चित नियम से जुडा नहीं है।इसलिए अनुवादक को इस सम्बन्ध में मूल भाषा के उच्चारण तथा ध्वन्यात्मकता से परिचित होना अनिवार्य है। तभी किसी भाषा का दूसरी भाषा में सही अनुवाद हो सकता है। [2]

2 रूप विज्ञान विषयक समस्याएं–

रूप विज्ञान और अनुवाद का सीधा सम्बन्ध है। रूप विज्ञान में किसी भाषा में मूल शब्दों की धातुओं के आधार पर भाषा में प्रयुक्त होने वाले अनेक रूपों की रचना की जानकारी दी जाती है। धातु, प्रत्यय, उपसर्ग, और उनकी विधियां, रूप मात्रा उनका क्रम, और शब्द रचना–प्रक्रिया आदि का ज्ञान रूप विज्ञान से ही प्राप्त होता है। अनुवादक को लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा के रूपविज्ञान का अच्छा ज्ञान

होना चाहिए। यदि अनुवादक की दोनों भाषाओं पर अच्छी पकड है तो उसे अनुवाद करने में कठिनाई नहीं होगी, अन्यथा अनुवादक को अच्छा अनुवाद करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पडेगा, तथा इसके अभाव में अच्छे अनुवाद की आशा करना व्यर्थ होगा। आज नई–नई संकल्पनाएं सामने आ रही हैं। अनुवादक को कोशकार के रूप में नएनए समानकों का निर्माण करना पडता है। इस के लिए उसे रूप विज्ञान से अच्छी तरह परिचित होना आवश्यक है। उसे दोनों भाषाओं के प्रत्यय और उपसर्ग और उनके सम्मेल से शाब्दिक एवं अर्थ सम्बन्धि परिवर्तन से भी परिचित होना आवश्यक है। [3]

इसके अतिरिक्त लिंग, वचन, संबन्धी समस्याएं भी आती हैं। अन्य भाषाओं की तुलना में हिन्दी में लिंग वचन की जानकारी के लिए कुछ कठिन प्रयास करना पडता है, जबकि विदेशी भाषाओं में अधिक सरलता है। इस लिए अनुवादक को मूल भाषा की रूप–रचना और शब्द–रचना की पूर्ण जानकारी अनिवार्य है। अगर अनुवादक इसका अच्छा ज्ञान रखता है तो निश्चित ही वह मूल भाषा की सामग्री को समझकर लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल उसे प्रस्तुत कर सकता है।

3 अर्थ विज्ञान विषयक समस्याएं–

वस्तुतः अनुवादक का मुख्य उद्देश्य स्त्रोत भाषा अथवा मूल पाठ के अर्थ को लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित करना होता है। अर्थ विज्ञान का कार्य स्त्रोत–भाषा के कथ्य को यथावत् लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना होता है। स्पष्ट है कि अनुवाद और अर्थ दोनों का सम्बन्ध भाषा के अर्थ पक्ष से है। अर्थ विज्ञान में भाषा की सार्थक इकाई का अध्ययन किया जाता है, जो मानव समाज में भाव के आदान–प्रदान में सहयोगी होती है। [4]

अनुवाद में एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते हुए अर्थ का सम्प्रेषण होता है। इस लिए अनुदित सामग्री में अर्थ का ठीक ठीक सम्प्रेषण ही अनुवादक का परम उद्देश्य है। इसके लिए अनुवादक को स्थान, समय, एवं परिस्थिति के अनुसार अभिव्यंजित अर्थ का ध्यान रखते हुए अनुवाद करना चाहिए ताकि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय अर्थ में परिवर्तन न आ जाएं। उदाहरण स्वरूप महाजन शब्द का भिन्न भिन्न क्षेत्रों में भिन्न अर्थ होता है, इस मर्म को समझे बिना सही अनुवाद नहीं हो सकतां इसी तरह चलता पुर्जा के भिन्न स्थानों में भिन्न अर्थ ग्रहण किए जाते हैं। इस तरह इन शब्दों में निहित अर्थ–शक्ति को पहचानने की दृष्टि होना परम आवश्यक है। विभिन्न प्रदेशों में किस प्रकार एक जगह प्रचलित शब्द के अर्थ दूसरी जगह बदल जाते हैं, इस का ध्यान रखने पर ही सही अनुवाद हो सकता है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। इसी प्रकार भाषा में निहित व्यंग्यार्थ को भी समझकर उसे प्रेषित करना चाहिए यथा– शहर पानी के बिना मर रहा है। यहां लाक्षणिक अर्थ को जानने की क्षमता अनुवादक में होना आवश्यक है।

समय के साथ साथ अनेक शब्दों के अर्थ में भी परिवर्तन होता रहता है। इस बात को भी अनुवादक को समझना चाहिए। कुशल और प्रवीण शब्द के अर्थ में किस प्रकार अर्थ संकोच और और अर्थ विस्तार हुआ है, उसे जानने की आवश्यकता है तभी अनुवाद ठीक हो सकेगा।

अर्थ निर्धारण में संदर्भ की भी बडी भूमिका होती है। सन्दर्भ विहीन होने पर व्यंग्ययुक्त वाक्य व्यंग्यहीन हो जाता है। उदाहरणतः– वह भद्र पुरुष है, इस वाक्य में व्यंग्य छिपा हुआ है कि वह भद्र नहीं है। परन्तु जब इसे साधारण वाक्य की तरह ग्रहण करेंगे तो इसमें व्यंग्य नहीं होगा और यह अभिधात्मक अर्थ को व्यंजित करेगा।

इसके इलावा लिंग के आधार पर भी अर्थ को निश्चित करने में सहायता मिलती है। संस्कृत में मित्र शब्द के लिंग के आधार पर दो अर्थ होते हैं। अगर मित्र शब्द को पुल्लिंग के रूप में प्रयोग किया जाए तो इसका अर्थ होगा–सूर्य और यदि नपुंसकलिंग में प्रयोग किया हो तो इसका अर्थ दोस्त होगा।

अनेक भाषाओं में वचन के आधार पर भी अर्थ का ग्रहण होता है, विशेषकर अंग्रेजी में ऐसा देखने को मिलता है। इस तरह अनुवादक के लिए अनिवार्य है कि वह स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की अर्थ सूचना सम्बन्धी पूर्ण जानकारी रखे। तभी उसे सफल अनुवादक कहा जा सकता है।

4 वाक्य विज्ञान विषयक समस्याएं–

वस्तुतः भाषा का मुख्य कार्य यदि भाव–अभिव्यक्ति है तो अनुवाद का मुख्य कार्य भी भावसम्प्रेषण अथवा अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति के लिए वाक्य महत्व पूर्ण होते हैं। प्रत्येक भाषा का वाक्यविन्यास पृथक् पृथक् होता है। अतः अनुवादक के लिए अनिवार्य है कि उसे स्त्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा के वाक्यविन्यास की पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए, तभी सही अनुवाद कर सकेगा। भाषा की मूलभूत इकाई शब्द नहीं, अपितु वाक्य होती है। अतः वाक्य सर्वाधिक महत्व पूर्ण है। वाक्य के सम्बन्ध में निम्नलिखित दृष्टिकोणों से विचार किया जा सकता है–

क वाक्य की बाह्य व आन्तरिक संरचना–

अनुवादक को वाक्य की दोनों प्रकार की संरचनाओं का भलीभान्ति ज्ञान होना आवश्यक है। वाक्य की क्रिया काल की सूचक होती है, उसी से उसके अर्थ की भिन्नता का अनुभव हो जाता है तथा उसके अनुसार ही अनुवाद करता है। यह ज्ञान स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का होना बहुत जरूरी है।

ख निकटतम अवयव विषयक अध्ययन–

वाक्य जिन विभिन्न पदों से निर्मित होते हैं, उन्हें ही वाक्य के अवयव कहा जाता है। अनुवाद करते समय यह जानना अत्यधिक जरूरी है कि वाक्य का कौन सा अवयव किस अवयव के अत्यधिक समीप है।वाक्य में पद या अवयव की निकटता स्थान की दृष्टि से नहीं, अपितु अर्थ की दृष्टि से होती है। निकटस्थ अवयव के ज्ञान से वाक्य की न केवल शुद्ध रचना होती है अपितु शुद्ध उच्चारण भी तभी सम्भव है।इसके बिना वाक्य का शुद्ध अर्थग्रहण करना भी असम्भव हो सकता है। निकटस्थ अवयव के ज्ञान से वाक्य के शुद्धपदक्रम–प्रयोग का भी सही ज्ञान होता है। दोनों भाषाओं अर्थात् स्त्रोत और लक्ष्य भाषा के निकटस्थ अवयवों के ज्ञान होने पर उनसे संबन्धित वाक्यों का दूसरी भाषा में अनुवाद करने में सुविधा होती है। इसी तरह लिंग, वचन, कारकचिन्ह, पदक्रम, काल, आदि की भी विभिन्न भाषाओं में असमानता होती है। अनुवादक को अनुवाद करते समय इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है। [5]

पदक्रम का अनुवाद में बडा महत्व है। हिन्दी और अंग्रेजी भाषा का पदक्रम अलग अलग प्रकार का है। अनुवादक को इसकी पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। हिन्दी वाक्य में कर्ता, कर्म, और क्रिया होती है, जबकि अंग्रेजी में कर्ता, क्रिया और कर्म इस प्रकार शब्द विन्यास होता है।

विभिन्न भाषाओं में काल सम्बन्धी भिन्नताओं की भी जानकारी अनुवादक को होनी चाहिए। अनेक भाषाओं के अनुवाद के लिए इस सम्बन्ध में पूर्व ही अनुवादक को ज्ञान होना अनिवार्य है।

उपरोक्त समस्याओं के अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक एवं सामाजिक सन्दर्भों की भी पर्याप्त जानकारी होना आवश्यक है। प्रत्येक भाषा का अलग सांस्कृतिक एवं सामाजिक सन्दर्भ होता है। अनुवादक को चाहिए कि जब भी स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद करे सन्दर्भों का ध्यान रखना चाहिए।

पुरानी कृतियों का अनुवाद करते समय आधुनिक संदर्भ के अनुसार अनुवाद करने पर पाठकों को उसे समझने में कठिनाई नहीं होगी। [6]

इस तरह अनेक कठिनाईयों का अनुवाद करते समय ध्यान रखना अनिवार्य है ताकि सही संदर्भ में स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में अनुवाद हो सके। अनुवाद करना एक कला है इसमें एक साथ अनेक पक्षों, बिन्दुओं का ध्यान न रखने के कारण अनुवाद सफल नहीं हो सकता।

श्रेष्ठ अनुवादक के लिए दोनों भाषाओं का ज्ञान होने पर सोने पर सुहागा की कहावत चरितार्थ हो जाती है। कई बार अच्छे अनुवादक भी अनुवाद करने में असफल हो जाते हैं क्योंकि वे दोनों भाषाओं के मर्मज्ञ नहीं होते तथा एक भाषा में जो कुछ कहा गया होता है उसके विपरीत दूसरी भाषा में उसका अर्थ ग्रहण किया जाता है। काव्य के क्षेत्र में यह समस्या अधिक सामने आती है।

सन्दर्भ सूचि

1 ए नारायण प्रसाद अनुवाद की परिभाषाएं पृ 76
2 प्रमिला, के पी अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएंपृ 112
3 रामगोपाल सिंह अनुवाद विज्ञान– स्वरूप और समस्याएं पृ 67
4 डॉ श्री नारायण समीर अनुवाद की प्रक्रिया तकनीक और समस्याएं पृ 134
5 कैलाश चन्द भाटिया भारतीय भाषा और हिन्दी अनुवाद समस्या समाधान पृ 145
6 डॉ भोला नाथ तिवारी अनुवाद विज्ञान– सिद्धान्त एवं प्रविधि पृ 70